Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **सिंधु घाटी सभ्यता की आर्थिक संरचना में कृषि एवं पशुपालन।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

सिंधु घाटी सभ्यता की आर्थिक संरचना में कृषि एवं पशुपालन।

सिंधु सभ्यता का आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन, विभिन्न प्रकार से उद्योग-धंधों तथा व्यापार वाणिज्य पर आश्रित था।

कृषि -:

सिंधु वासियों का मुख्य पेशा कृषि कार्य था।सिंधु तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा प्रति वर्ष लायी गयी उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी कृषि हेतु महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी। इन उपजाऊ मैदानों में मुख्य रूप से गेहूं और जौ की खेती की जाती थीं।सिंधु घाटी की यही मुख्य फसल भी थी।अभी तक 9 फसलें पहचानी गयी हैं।चावल केवल गुजरात (लोथल) में और संभवतः राजस्थान में भी।जौ की दो किस्में, गेहूं की तीन किस्में, कपास, खजूर, तरबूज, मटर और एक ऐसी किस्म जिसे 'ब्रासिक जुंसी' की संज्ञा दी गयी हैं ।इसके अतिरिक्त मटर, सरसों, तिल एवं कपास की भी खेती होती थी। लोथल में खुदाई से धान तथा बाजरे

की खेती के अवशेष मिले हैं।

इस समय खेती के कार्यों में प्रस्तर एवं कांस्य धातु के बने औजार प्रयुक्त होते थे।कृषि में धातु केऔजारों का उपयोग एवं सिंचाई के कृत्रिम साधन मौजूद होने के कारण कृषि में उत्पादन अधिशेष (Agricultural Surplus) की स्थिति थी,अन्नागार की मौजूदगी इस तथ्य को प्रमाणित करती है। इस अधिशेष ने शिल्प एवं व्यापार वाणिज्य को बढ़ावा दिया।कालीबंगा में प्राक्-सैंधव अवस्था के एक हल से जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है। बणावली में मिट्टी का बना हुआ एक हल का खिलौना मिला है। ऐसा माना जाता है कि हड़प्पा के लोग लकड़ी के हल का प्रयोग करते थे। सम्भवतः हड़प्पा सभ्यता के लोग ही सर्वप्रथम कपास की खेती भी प्रारम्भ किये। इसी कारणवश यूनानी लोगों ने इस प्रदेश को 'सिडोन' कहा। लोथल से अनाज को पीसने की पत्थर की चक्की के दो पाट मिले हैं।पेड़-पौधों में पीपल, खजूर, नीम, नीबू एवं केला उगाने के साक्ष्य मिले हैं।

पशुपालन -:

पुरातात्विक साक्ष्यों जैसे- मुहरों,मृदभांडोंपर अंकित पशु आकृतियों एवं प्राप्त जीवाश्मों के आधर पर यह कहा जा सकता है कि कृषि के साथ- साथ पशुपालन भी पर्याप्त विकसित था। पशुओं से दूध, मांस, ऊन आदि तो मिलते ही थे साथ ही उनका उपयोग परिवहन के साधनों के रूप में भी होता था। मुख्य पालतू पशुओं में ऊंचे कंधे वाले (कुबरदार) एवं सामान्य कंधे वाले बैल, भैंस, गाय, भेड़-बकरी, कुत्ते, गधे, खच्चर और सुअर आदि है। हाथी और घोड़े पालने के साक्ष्य प्रमाणित नहीं हो सके हैं। लोथल एवं रंगपुर से घोड़े की मृण्मूर्तियों के अवशेष मिले हैं। सुरकोटदा से सैन्धव कालीन धोड़े की अस्थिपंजर के अवशेष मिलहै। कुछ पशु-पक्षियों जैसे बन्दर, खरगोश, हिरन, मुर्गा, मोर, तोता उल्लू के अवशेष खिलौनों और मूर्तियों के रूप में मिले हैं।

References: Internet & Competitive books.